



Munne Ki Lash (Gujarati)

# મુન્ને કી લાશ

(ગૌસે આ'ઝમ رحمة الله تعالى عليه કી હિકાયત)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હાજરત અલ્યામા મૌલાના અબુ બિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્લાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી رحمة الله تعالى عليه

مكتبة المدينة  
(موسسة إسلامية)

SC1268

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### क़िताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, हजरत अल्लामा  
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अत्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه  
 दीनी क़िताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ  
 लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह! हम पर इल्म व हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी  
 रहमत नाज़िल करमा ! ओ अ-जमत और बुजुर्गा वाले ! (المستطرف ج ١ ص ١٠٠ دارالفکر بیروت)  
 नोट : अव्वल आभिर ओक ओक बार दुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बकीअ

व मज्किरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



### “मुन्ने की लाश”

येह रिसाला (मुन्ने की लाश)

शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी हजरत अल्लामा  
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अत्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه  
 ने उर्दू ज़बान में तहरीर करमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने इस रिसाले को गुजराती रस्मुल  
 फत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ करवाया  
 है. इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को (ब जरीअअे  
 मकतूब, ई-मेईल या SMS ) मुत्तलअ करमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,

अहमदआबाद-1, गुजरात, ईन्डिया

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# मुन्ने की लाश

शैतान लाभ सुस्ती ढिलाये येड रिसाला (18 सफ़हात) मुकम्मल

पढ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप के दिल में गौसे आ'ज़म

की मलबबत मजीद बढ जायेगी. عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ

## दुइए शरीफ़ की इमीलत

नबिये मुअज़्ज़म, रसूले मोहतरम, सुल्ताने जी उशम,  
सरापा जूदो करम, उबीने मुकर्रम, मलबूबे रब्बे अकरम  
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : मुसल्मान जब तक मुज पर दुइए  
शरीफ़ पढता रहता है फिरिश्ते उस पर रहमतें भेजते रहते हैं अब बन्दे  
की मरगी है कम पढे या ज़ियादा.

(ابن ماجه ج 1 ص 490 حديث 907 دارالمعرفة بيروت)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

भानकाड में अेक बा पढा जातून अपने मुन्ने की लाश यादर में  
लिपटाये, सीने से चिमटाये ज़ारो कितार रो रही थी. धतने में अेक  
“म-दनी मुन्ना” दौउता हुवा आता है और डम-ददना लडजे में उस  
जातून से रोने का सभब दरयाफ़्त करता है. वोड रोते हुअे कडती है :

करमाने मुस्तकी : ضلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : જો શપ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્મત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (جران)

બેટા ! મેરા શોહર અપને લખ્તે જિગર કે દીદાર કી હસરત લિયે દુન્યા સે રુખ્સત હો ગયા હૈ, યેહ બચ્ચા ઉસ વક્ત પેટ મેં થા ઓર અબ યેહી અપને બાપ કી નિશાની ઓર મેરી ઝિન્દગાની કા સરમાયા થા, યેહ બીમાર હો ગયા, મેં ઈસે ઈસી ખાનકાહ મેં દમ કરવાને લા રહી થી કે રાસ્તે મેં ઈસ ને દમ તોડ દિયા હૈ, મેં ફિર ભી બડી ઉમ્મીદ લે કર યહાં હાઝિર હો ગઈ કે ઈસ ખાનકાહ વાલે બુઝુર્ગ કી વિલાયત કી હર તરફ ધૂમ હૈ ઓર ઈન કી નિગાહે કરમ સે અબ ભી બહુત કુછ હો સકતા હૈ મગર વોહ મુઝે સખ્ર કી તલ્કીન કર કે અન્દર તશરીફ લે જા ચુકે હૈં. યેહ કહ કર વોહ ખાતૂન ફિર રોને લગી. “મ-દની મુન્ને” કા દિલ પિઘલ ગયા ઓર ઉસ કી રહમત ભરી ઝબાન પર યેહ અલ્ફાઝ ખેલને લગે : “મોહ-ત-રમા ! આપ કા મુન્ના મરા હુવા નહીં બલ્કે ઝિન્દા હૈ ! દેખો તો સહી ! વોહ હ-ર-કત કર રહા હૈ.” દુખિયારી માં ને બેતાબી કે સાથ અપને “મુન્ને કી લાશ” પર સે કપડા ઉઠા કર દેખા તો વોહ સચમુચ ઝિન્દા થા ઓર હાથ પૈર હિલા કર ખેલ રહા થા. ઈતને મેં ખાનકાહ વાલે બુઝુર્ગ અન્દર સે વાપસ તશરીફ લાએ. બચ્ચે કો ઝિન્દા દેખ કર સારી ખાત સમઝ ગએ ઓર લાઠી ઉઠા કર યેહ કહતે હુએ “મ-દની મુન્ને” કી તરફ લપકે કે તૂને અભી સે તકદીરે ખુદા વન્દી કે સર બસ્તા રાઝ ખોલને શુરૂઅ કર દિયે હૈં ! મ-દની મુન્ના વહાં સે ભાગ ખડા હુવા ઓર વોહ બુઝુર્ગ ઉસ કે પીછે દૌડને લગે, “મ-દની મુન્ના” યકાયક કબ્રિસ્તાન કી તરફ મુડા ઓર બુલન્દ આવાઝ સે પુકારને લગા : ઐ કબ્ર વાલો ! મુઝે બચાઓ ! તેઝી સે લપકતે હુએ બુઝુર્ગ અચાનક ઠિઠક કર રુક ગએ ક્યૂંકે કબ્રિસ્તાન સે ત્રીન સો<sup>300</sup> મુર્દે ઉઠ કર ઉસી “મ-દની મુન્ને” કી ઢાલ બન ચુકે થે ઓર વોહ “મ-દની મુન્ના” દૂર ખડા અપના ચાંદ સા ચેહરા ચમકાતા

करमाने मुस्तकी علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद पाक न पढा तलकीक वोह बढभन्त हो गया. (उरु)

मुस्करा रहा था. उन बुजुर्ग ने बड़ी हसरत के साथ “म-दनी मुन्ने” की तरफ़ देखते हुअे कहा : बेटा : हम तेरे मर्तबे को नहीं पहोंच सकते, इस लिये तेरी मरजी के आगे अपना सरे तस्लीम भम करते हैं.

(مُلَخَّصُ از الحقائق فی الحقائق ج ۱ ص ۶۲ او غیر مکتبہ اویسر رضویہ، بہاولپور پاکستان)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आप जानते हैं वोह “म-दनी मुन्ना” कौन था ? उस म-दनी मुन्ने का नाम अब्दुल कादिर था और आगे यल कर वोह गौसुल आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمُ के लकभ से मशहूर हुअे.

क्यूं न कासिम हो के तू ईब्ने अबिल कासिम है

क्यूं न कादिर हो के मुफ्तार है बाबा तेरा

(हदाईके बफ़िश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

अथपन शरीफ़ की सात करामात

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हमारे गौसुल आ'उम

مَا دَرَّ جَاذَ وَ لَيَّ يَ . ﴿ 1 ﴾ आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अभी

अपनी मां के पेट में थे और मां को जब छींक आती और इस पर

जब वोह كَلَّمْتَنِي तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पेट ही में जवाबन

كَلَّمْتَنِي كَلَّمْتَنِي . ﴿ 2 ﴾ आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ यकुम

र-मजानुल मुबारक बरोज पीर सुब्हे सादिक के वक्त दुन्या में जल्वा

गर हुअे उस वक्त होंट आखिस्ता आखिस्ता ह-र-कत कर रहे थे

और अल्लाह अल्लाह की आवाज आ रही थी (سَمِعْتُ) ﴿ 3 ﴾ जिस दिन

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की विलादत हुई उस दिन आप

के द्वियारे विलादत जलान शरीफ़ में ग्यारह सो<sup>1100</sup> बरये पैदा

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर दस भरतबा सुबह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा।  
(उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी। (عَنْ الرَّوَّاحِ))

हुआ वोह सब के सब लउके थे और सब वलिय्युल्लाह बने  
(10) गौसुल आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने पैदा होते  
ही रोजा रभ लिया और जब सूरज गुर्बुह हुवा उस वक्त मां का दूध  
नोश इरमाया. सारा र-मजानुल मुबारक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का  
येही मा'मूल रहा (11) पांय<sup>5</sup> बरस की उम्र में जब  
पहली बार بِسْمِ اللهِ पढने की रस्म के लिये किसी बुजुर्ग के पास बैठे  
तो اَعُوذُ اللهُ और بِسْمِ اللهِ पढ कर सूरजे फातिहा और اَللّٰهُمَّ से ले कर  
अह्मरह पारे पढ कर सुना दिये. उन बुजुर्ग ने कहा : बेटे ! और  
पढिये. इरमाया : बस मुझे इतना ही याद है क्यूंके मेरी मां को भी  
इतना ही याद था, जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक्त वोह  
पढा करती थीं, मैं ने सुन कर याद कर लिया था (12) (الْحَقَّ فِي الْاَمْرَيْنِ ص 140)  
जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ लउक-पन में खेलने का इरादा इरमाते, गैब  
से आवाज आती : ओ अह्दुल कादिर ! हम ने तुजे खेलने के वासिते  
नहीं पैदा किया (13) (الْبَيْهَقِيُّ) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मद्रसे में तशरीफ ले  
जाते तो आवाज आती : “अल्लाह के वली को जगह दे दो.”

(تَهْجَةُ الْاَسْرَارِ ص 48)

न-बवी मीह अ-लवी इस्ल बतूली गुलशन

ह-सनी हूल हुसैनी है महकना तेरा

(हदाइके बज्शिश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

**करामत की ता'रीफ**

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! आ'ज अवकात आदमी  
करामाते औलिया के मुआ-मले में शैतान के वस्वसे में आ कर

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (मिर्ज़ा)

करामात को अकल के तराजू में तोलने लगता है और यूं गुमराह हो जाता है. याद रखिये ! करामत कहते ही उस भिर्के आदत बात को हैं जो आदतन मुहाल या'नी जाहिरि अस्बाब के जरीअे उस का सुदूर ना मुश्किन हो मगर अह्लाह عَزَّوَجَلَّ की अता से औलियाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى से औसी बातें बसा अवकात सादिर हो जाती हैं. नबी से कबल अज अे'लाने नुबुव्वत औसी थीजें जाहिर हों तो उन को ईरहास कहते हैं और अे'लाने नुबुव्वत के बा'द सादिर हों तो मो'जिजा कहते हैं. आम मुअमिनीन से अगर औसी थीजें जाहिर हों तो उसे मउिनत और वली से जाहिर हों तो करामत कहते हैं. नीज काफ़िर या फ़ासिक से कोई भिर्के आदत जाहिर हो तो उसे ईस्तिदराज कहते हैं. (मुलम्भस अज : बहारे शरीअत, जि. 1, स. 56, 58, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना करायी)

अकल को त-कीद से कुरसत नहीं

ईशक पर आ'माल की बुन्याद रख

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

गौसे आ'उम ने मिर्गी को बगा दिया

अेक मर्तबा बारगाहे गौसिय्यत मआब में हाजिर हो कर अेक शप्स ने अर्ज की : आलीजाल मेरी जौजा को मिर्गी हो गई, हुजूरे गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरमाया : "ईस के कान में कह दो गौसे आ'उम का हुकम है के बगदाद से निकल जा." युनान्थे उसी वक्त वोह अथ्ही हो गई.

(مُلَخَّصٌ از بهجة الاسرار للشطنوفى ص ٤٠ ٤١ ٤٢ دارالكتب العلمية بيروت)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शर्काअत करूंगा. (अमल)

## मिर्गी शरीर जिन्न है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मेरे आका आ'ला उज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज़ा खान इरमाते हैं : (मिर्गी) बहुत खबीस बला है और ईसी को उम्मुस्सिब्यान कहते हैं, (बच्चों की अेक भीमारी जिस से आ'जा में जटके लगते हैं) अगर बच्चों को डो, वरना सर-अ (मिर्गी). तज़रिबे से साबित हुवा है के अगर पच्चीस<sup>25</sup> बरस के अन्दर अन्दर डोगी तो उम्मीद है के जाती रहे और अगर पच्चीस<sup>25</sup> बरस के बा'द या पच्चीस<sup>25</sup> बरस वाले को डुई तो अब न जायेगी. हां किसी वली की करामत या ता'वीज़ से जाती रहे तो येह अत्र आपर (या'नी और बात) है. येह (या'नी मिर्गी) झिल डकीकत अेक (शरीर जिन्न या'नी) शैतान है जो ईन्सान को सताता है.

## बच्चों को मिर्गी से बचाने का नुस्खा

बच्चा पैदा होने के बा'द जो अज़ान में ढेर की जाती है, ईस से अक्सर येह (या'नी मिर्गी का) मरज़ डो जाता है और अगर बच्चा पैदा होने के बा'द पडला काम येह किया जाये के नडला कर अज़ान व ईकामत बच्चे के कान में कड दी जाये तो إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ उत्र त्र (मिर्गी से) मडङ्गी है.

(मडङ्गाते आ'ला उज़रत, स. 417, मक-त-अतुल मदीना, बाबुल मदीना करायी)

रज़ा के सामने की ताब किस में

इलक वार ईस पे तेरा जिल है या गौस

(डदाईके अफ़िश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुसलमानों पर दुश्मने पाक की कसरत करो बेशक ये ल तुम्हारे लिये तदारत है. (अहमद)

## गौसुल आ'जम का क़ूंआं

एक बार बगदाद मुअल्ला में ताउिन की भीमारी फैल गई और लोग धडाधड मरने लगे. लोगों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की प्बिदमत में ईस मुसीबत से नज़ात दिलाने की दर-प्वास्त पेश की. इरमाया : “उमारे मद्रसे के ईई गिई ज़ो घास है वो ल प्आओ और उमारे मद्रसे के क़ूंआं का पानी पियो, ज़ो अैसा करेगा वो ल उर मरज़ से शिफ़ा पाओगा.” युनान्ये घास और क़ूंआं के पानी से शिफ़ा मिलनी शुज़ुअ हो गई यहां तक के बगदाद शरीफ़ से ताउिन अैसा आगा के इर कत्मी पलट कर न आया.

(تفريعُ الخاطرفى مناقب الشيخ عبدالقادر ص ٤٣)

“तबकाते कुब्रा” में गौसे आ'जम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का ये ल ईशाद ली नकल किया गया है : “जिस मुसलमान का मेरे मद्रसे से गुज़र हुवा कियामत के रोज़ उस के अजाब में तप्फ़ीफ़ हो गी.” (الطَّبَقَاتُ الْكُبْرَى لِلشُّعْرَانِي الْجُزء الاول ص ١٧٩ دارالفكر بيروت) की उन पर रडमत हो और उन के सदके उमारी बे हिसाब मग़िरेत हो.

गुनाहों के अमराज की ली दवा दो

मुझे अब अता हो शिफ़ा गौसे आ'जम

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

## क़ूबी हुई आरात

एक बार सरकारे बगदाद हुज़ूर सय्यिदुना गौसुल आ'जम

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ दरिया की तरफ़ तशरीफ़ ले गये, वहां एक बुढिया को देखा

करमान मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुज पर दुर्रद पढ़ो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पहुँचता है. (طبرانی)

जो ज़ारो कितार रो रही थी. अक़ मुरीद ने बारगाले गौसिय्यत में अर्ज़ की : या मुर्शिदी ! इस जर्हफ़ा का ईकलौता भूब-रू बेटा था, बेयारी ने उस की शादी रयाई दूल्हा निकाल कर के दूल्हन को ईसी दरिया में कश्ती के जरीअे अपने घर ला रखा था के कश्ती उलट गई और दूल्हा दूल्हन समेत सारी बारात डूब गई. इस वाकिअे को आज बारह<sup>12</sup> बरस गुजर चुके हैं मगर मां का जिगर है, बेयारी का गम जाता नहीं है, येह रोज़ाना यहाँ दरिया पर आती और बारात को न पा कर रो घो कर यली जाती है. हुज़ूर गौसुल आ'उम عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم को इस जर्हफ़ा (या'नी बुढिया) पर बडा तर्स आया, आप عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने अद्लाह وَعَزَّ وَجَلَّ की बारगाल में दूआ के लिये हाथ उठा दिये, यन्द मिनट तक कुछ भी जुडूर न हुवा, बेताब हो कर बारगाले ईलाही وَعَزَّ وَجَلَّ में अर्ज़ की : या अद्लाह وَعَزَّ وَجَلَّ ! ईस कदर तापीर क्यूं? ईशाद हुवा : “अै मेरे प्यारे ! येह तापीर पिलाके तक्दीर व तदबीर नहीं है, हम याहते तो अेक हुक़्मे कुन से तमाम ज़मीन व आस्मान पैदा कर देते मगर ब मुक्तज़ाअे खिक्तत ९<sup>०</sup> दिन में पैदा किये, बारात को डूबे 12 साल बीत चुके हैं, अब न वोह कश्ती बाकी रही है न ही उस की कोई सुवारी, तमाम ईन्सानों का गोश्त वगैरा भी दरियाई जानवर प्या चुके हैं, रेजे रेजे को अजज़ाअे जिस्म में ईकच्च करवा कर दोबारा जिन्दगी के मरहले में दाखिल कर दिया है, अब उन की आमद का वक्त है” अमी येह कलाम ईप्तिताम को भी न पड़ोया था के यकायक वोह कश्ती अपने तमाम तर साओ सामान के साथ मअ दूल्हा दूल्हन व बराती सत्हे आब पर नुमूदार हो गई और यन्द ही लम्हों में कनारे आ लगी, तमाम बाराती सरकारे बगदाद عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से दूआअे ले कर भुशी भुशी अपने घर पड़ोये. ईस करामत को सुन कर बे शुमार कुफ़्फ़ार ने आ आ कर सय्यिदुना गौसे आ'उम عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم के दस्ते हक परस्त पर ईस्लाम कबूल किया.

(سلطانُ الإنكار في مناقبِ غوثِ الأبرار، لشاه محمد بن الهمدني)

करमान मुस्तकी : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीक न पढे तो वोह लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (ज़िबेय्या)

निकावा हे पडले तो डूबे डुओं को  
और अब डूबतों को बया गौसे आ'जम

(जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

क्या बन्दा मुर्दा जिन्दा कर सकता है ?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बेशक मौत व डयात अल्लाह

के ईप्तिहार में है लेकिन अल्लाह ए'ज्जल अउने किसी बन्दे को मुर्दे  
जिलाने की ताकत बप्शे तो उस के लिये कोई मुश्किल बात नहीं है और  
अल्लाह ए'ज्जल की अता से किसी और को डम मुर्दा जिन्दा करने वाला  
तस्लीम करें तो ईस से डमारे ईमान पर कोई असर नहीं पडता,  
अगर शैतान की बातों में आ कर किसी ने अपने जेडून में येड बिठा  
लिया है के अल्लाह ए'ज्जल ने किसी और को मुर्दा जिन्दा करने की ताकत  
ही नहीं दी तो उस का येड नजरिया यकीनन डुकमे डुरआनी के षिलाफ़  
है देऱिये डुरआने पाक डजरते सय्यिदुना ईसा इडुल्लाड  
के मरीजों को शिफ़ा देने और मुर्दे जिन्दा करने की  
ताकत का साफ़ साफ़ अ'लान कर रडा है. जैसा के पारड उ सूरअे आले  
ईमरान की आयत नम्बर 49 में डजरते सय्यिदुना ईसा इडुल्लाड  
का येड ईशाद नकल किया गया है :

وَأُبْرِيءِ الْأَكْمَهَةِ وَالْأَبْرَصِ

तर-ज-मअे कजुल ईमान : और मैं शिफ़ा  
देता हूँ मादर ज़ाद अन्धों और सफ़ेद

وَأُحْيِي الْمَوْتَى بِإِذْنِ اللَّهِ

दाग वाले (या'नी कोढी) को और मैं मुर्दे  
जिलाता हूँ अल्लाह ए'ज्जल के डुकम से.

उम्मीद है के शैतान का डाला डुवा वस्वसा जड से कट गया  
डोगा, क्यूंके मुसल्मान का डुरआने पाक पर ईमान डोता है और  
वोड डुकमे डुरआने करीम के षिलाफ़ कोई दलील तस्लीम करता ही नहीं.

करमाने मुस्तकी! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरदे पाक न पड़े. (५)

बहर डाल अद्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मकबूल बन्दों को तरह तरह के इप्तियारात से नवाजता है और ब अताअे खुदा वन्दी उन से औसी बातें सादिर डोती हैं जो अकले इन्सानी की बुलन्दियों से वराउल वरा डोती हैं. यकीनन अहलुद्लाह के तसरुफात व इप्तियारात की बुलन्दी को दून्या वालों की परवाजे अकल छू भी नहीं सकती.

### साइन्स दान की नजर

दौरे डालिर का सब से बडा साइन्स दान “आइन स्टाइन” कड गया है : “मैं ने रेडियो दूरबीन के जरीअे अेक औसा कडकशां तो देभ लिया है जो जमीन से दौ करोड नूरी साल दूर है या’नी रोशनी जो डी सेकन्ड अेक लाभ छियासी डजार भील तै करती है, वहां दौ करोड साल में पडोंयेगी मगर जहां तक काअेनात की सरहदें मा’लूम करने का तअद्लुक है अगर मेरी उम्र अेक मिल्यन या’नी दस लाभ बरस भी डो जाअे तब भी दरयाइत नहीं कर सकता .”

साइन्स दान के बर अक्स खुदाअे रहमान عَزَّوَجَلَّ के वली हुजूर गौसे आ’जम عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की नजर की अ-जमत व शान देभिये ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हैं :

نَظَرْتُ إِلَى بِلَادِ اللَّهِ جَمْعًا كَخَرْدَلَةٍ عَلَى حُكْمِ التَّصَالِ  
(या’नी अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम शहर मेरी नजर में ईस तरह हैं जैसे डथेली में राई का दाना)

मेरे आका आ’ला डजरत عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى बारगाडे गौसिय्यत मआब में अर्ज करते हैं :

كَأَنَّكَ تَجْرُكُ كَمَا هِيَ سَايَا تُوْجٍ عَلَى  
बोलबाला है तेरा जिक्र है ठिया तेरा

(डदाईके बफिशश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तकी صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुइरे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

## बद अकीदा कालि की सजा

अब विसाल शरीफ़ के तवील अर्से के भा'द रन्जत सिंध के दौरे हुकूमत में हिन्दूस्तान में इनुमा होने वाला अक़ ईमान अफ़रोज वाकिआ पढिये और जूमिये : अक़ नाम निहाद मुसल्मान जो करामाते औलिया का मुन्दिर था, शूम'ई किस्मत से अक़ शादी शुदा हिन्दुवानी को दिल दे बैठा. अक़ बार हिन्दू अपनी बीवी को मयके पड़ोयाने के लिये घर से बाहर निकला, उधर उस बद अप्त आशिक पर शहूवत ने ग-लबा किया. युनान्थे उस ने उन का पीछा किया और अक़ सुनसान मकाम पर दोनों को घेर लिया, वोह दोनों पैदल थे और येह घोडे पर सुवार था, उस ने जूटमूट हमददी का ईजहार करते हुअे सुवारी की पेशकश की मगर हिन्दू ने ईन्कार किया, वोह ईस्वार करने लगा के अख़ण औरत ही को पीछे बैठने की ईज्जत दे दो के येह बेयारी थक़ ज़अेगी, हिन्दू को उस की निय्यत पर शुबा हो यला था लिहाज़ा उस ने कहा के तुम जमानत दो के किसी किस्म की पियानत किये बिगैर मेरी बीवी को मन्जिल पर पड़ोया दोगे. उस ने कहा के यहाँ जंगल में जामिन कहां से लाउं ? औरत बोल उठी : **मुसल्मान ग्यारहवीं वाले बडे पीर साहिब** को बहुत मानते हैं, तुम उन्हीं की जमानत दे दो. वोह अगर्थे गौसुल आ'जम رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيمِ के तसरुफ़ात का काँल नही था मगर येह सोय कर के हां कल देने में क्या जाता है, उस ने हां कल दी. जूँ ही औरत घोडे पर सुवार हुई, उस जालिम ने तलवार से उस के शोहर की गरदन उडा दी और घोडे को अड लगा दी, औरत गम से निढाल और सहमी हुई बार बार मुड कर पीछे देखे जा रही थी. उस ने कहा के बार बार पीछे देखने से कुछ हासिल नही होग़ा, तुम्हारा शोहर अब वापस नही आ सकता. उस ने कप-कपाती हुई आवाज़ में कहा : मैं तो **बडे पीर साहिब** को देख रही हूँ. ईस पर उस ने अक़ कड़कहा लगा कर कहा के बडे पीर साहिब को तो झैत हुअे कई साल गुज़र चुके हैं, अब त्वला वोह कहां से आ सकते हैं ! ईतना

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुन्ने पर दुव्वेद शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अबुसूरी)

कहना था के अयानक दौरे बुलुर्ग नुमूदार हुअे उन में से अेक ने ढढ कर तलवार से उस ढढ अकीदा आशिक का सर उडा दिय़ा फिर औरत को मअ धोडे के उस जगल लाअे जडां वोड छिन्दू कटा हुवा पडा था, दोनों में से अेक बुलुर्ग ने कटा हुवा सर धड से मिला कर कडा : “قُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ” या'नी उठ अल्लाह छेउ के हुकुम से. वोड छिन्दू उसी वक्त जिन्दा हो गया. वोड दोनों<sup>2</sup> बुलुर्ग गाँठढ हो गअे. येड दोनों मियां बीवी मक्तूल के धोडे पर सुवार हो कर धर लौट आअे. मक्तूल के वारिसों ने धोडा पडयान कर रन्जत सिंघ के कोर्ट में दोनों मियां बीवी पर केस कर दिय़ा के हमारा आदमी गाँठढ है और धोडा ँन के पास है, शायद ँन लोगों ने हमारे आदमी को क्तल कर दिय़ा है. पेशी हुँई, ँन मियां बीवी ने जंगल का सारा वाकिआ कड सुनाया और कडा के उन दोनों बुलुर्गों में से अेक बुलुर्ग यडां के मशहूर मज्जुब गुल मुडम्मद शाड साडिड के डम-शकल थे. युनान्चे उन मज्जुब बुलुर्ग को बुलवाया गया, वोड तशरीफ़ ले आअे और उन्हों ने आते ही अव्वल ता आभिर सारा वाकिआ लङ्ग ढ लङ्ग ढयान कर दिय़ा. लोग हुजुरे गौसे आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ की येड जिन्दा करामत सुन कर अश अश कर उठे. रन्जत सिंघ ने मुकदमा पारिज करते हुअे उन दोनों<sup>2</sup> मियां बीवी को ँन्नामो ँकराम दे कर रुप्सत किया. (अल्लुफ़ी अल्लुफ़ी म १५)

अल अमां कडूर हें अै गौस वोड तीपा तेरा

मर के भी थैन से सोता नहीं मारा तेरा

(डदाँके ढज्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## 70 बार अहतिलाम

डउरते सय्यिदुना गौसे आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ का अेक मुरीद अेक ही रात में नई नई औरतों के सबढ सत्तर<sup>70</sup> बार मुहत्तलिम हुवा. सुढ गुरल से फ़ारिग हो कर अपनी परेशानी की फ़रियाद ले कर अपने

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुर्रदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर्रदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगफिरत है. (मुज)

मुर्शिद करीम हुजुरे गौसे आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की पिढमते बा अ-उमत में छाजिर हुवा. कबल इस के, के वोह कुछ अर्ज करे, सरकारे बगदाद हुजुरे गौसे आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने खुद ही इरमाया : रात के वाकिअे से मत घबराओ, मैं ने रात लौहे महकूज पर नजर डाली तो तुम्हारे बारे में सत्तर<sup>70</sup> मुप्तविक्र औरतों के साथ जिना करना मुकदर था, मैं ने बारगाहे धलाही عَزَّوَجَلَّ में धिजा की के वोह तेरी तकदीर को बदल दे और धन गुनाहों से तेरी डिफाजत इरमाये. युनान्चे उन सारे वाकिआत को ज्वाब में अउतिलाम की सूरत में तब्दील कर दिया गया. (سُورَةُ الْاَسْرَارِ ص 193)

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है

तेरे हाथ है लाज या गौसे आ'उम

(जौके ना'त)

### इशादते गौसे आ'उम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! इस से मा'लूम हुवा के किसी पीरे कामिल की बैअत जरूर करनी याहिये के पीर की तवज्जोह से मुसीबतें टल जाती हैं और आ'उम अवकात बडी आफत छोटी आफत से बदल कर रह जाती है. "अइजतुल असरार शरीफ" में है, पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन उमीर, कुब्जे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, पीरे लासानी, किन्दीले नूरानी, शहबाजे ला मकानी, अशशौष अबू मुहम्मद सय्यिद अब्दुल कादिर जलानी كَاتِبُ سِرِّ سُلْطَانِ الْاَلْبَانِ का इरमाने बिशारत निशान है : मुजे अक बहुत बडा रजिस्टर दिया गया जिस में मेरे मुसाहिबों और मेरे क्रियामत तक होने वाले मुरीदों के नाम दर्ज थे और कडा गया के येह सारे अइराद तुम्हारे हवाले कर दिये गये हैं. इरमाते हैं, मैं ने दारोगअे जहन्नम से इस्तिफ़सार किया : क्या जहन्नम में मेरा कोई मुरीद भी है ? उन्हों ने ज्वाब दिया : "नहीं." आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने मजीद इरमाया : मुजे अपने परवर दगार की इज्जत व जलाल की कसम ! मेरा दस्ते

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुन्ने पर अक दुरेद शरीक पढेता है अल्लाह उस क लिये अक कीरात अजर लिपता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (ज़िज़्ज़)

हिमायत मेरे मुरीद पर इस तरह है जिस तरह आस्मान जमीन पर साया कुनां है. अगर मेरा मुरीद अख्श न भी हो तो क्या हुवा اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ में तो अख्श हूं. मुजे अपने पालने वाले की ईज़्ज़त व जलाल की कसम ! मैं उस वक्त तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से न हटूंगा जब तक अपने अक अक मुरीद को दामिले जन्नत न करवा लूं. (अय्या)

मुरीदों को पतरा नहीं बदरे गम से  
के बेडे के हैं नापुदा गौसे आ'जम

(जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ  
अमीमुश्शान करामत

अबुल मुज़फ़्फ़र इसन नामी अक ताजिर ने उजरते सय्यिदुना शैख उम्माद رحمه الله الجواد की बारगाह में छाजिर हो कर अर्ज की : हुज़ूर ! मैं तिज़ारत के लिये काङ्किले के उमराह मुल्के शाम जा रहा हूं, आप से दुआ की दर-प्वास्त है. सय्यिदुना शैख उम्माद رحمه الله الجواد ने इरमाया : “आप अपना सफ़र मुदतवी कर दीजिये, अगर गमे तो डाकू सारा माल भी लूट लेंगे और आप को कत्ल भी कर डालेंगे.” ताजिर येह सुन कर बडा धबराया, ईसी परेशानी के आलम में वापस आ रहा था के रास्ते में हुज़ूर गौसे आ'जम عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم मिल गमे, पूछा क्यूं परेशान हैं ? उस ने सारा वाकिआ कल सुनाया. आप رحمه الله تَعَالَى ने ईशदि इरमाया : परेशान न हों शौक से मुल्के शाम का सफ़र कीजिये, إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ सभ बेहतर हो जाओगा. युनान्चे वोह काङ्किले के साथ रवाना हो गया, उसे कारोबार में बहुत नफ़्अ हुवा, वोह अक उज़ार<sup>1000</sup> अशरफ़ियों की थेली लिये मुल्के शाम के शहर “उलब” पहुंचा. ईत्तिफ़ाकन वोह अशरफ़ियों की थेली कहीं रभ कर लूल गया, ईसी फ़िक में नींद ने ग-लबा किया और सो गया. उस ने अक उरावना प्वाब देभा के डाकूओं ने काङ्किले पर उम्वा



ફરમાને મુસ્તકી : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के लिये ईस्तिफ़कार करते रहेंगे. (अ/प्र)

કર કે સારા માલ લૂટ લિયા હૈ ઓર ઇસે ત્ની કતલ કર ડાલા હૈ ! ખોફ કે મારે ઉસ કી આંખ ખુલ ગઈ, ઘબરા કર ઉઠા તો વહાં કોઈ ડાકૂ વગૈરા ન થા. અબ ઉસે યાદ આયા કે અશરફિયોં કી થેલી ઉસ ને ફુલાં જગહ રખી હૈ, ઝટ વહાં પહોંચા તો થેલી મિલ ગઈ. ખુશી ખુશી બગદાદ શરીફ વાપસ આયા. અબ સોચને લગા કે પહલે ગૌસુલ આ'ઝમ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم سے मिलूं या शैख हम्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد سے ! ઇત્તિફાકન રાસ્તે મેં હી સચ્ચિદુના શૈખ હમ્માદ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد મિલ ગએ ઓર દેખતે હી ફરમાને લગે : “પહલે જા કર ગૌસે આ'ઝમ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم سے मिलो के वोह मહबूबे रब्बानी हैं, उन्हों ने तुम्हारे डक में 17 बार दुआ मांगी थी तब कहीं जा कर तुम्हारी तकदीर बदली जिस की मैं ने ખબર દી થી, અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ને તુમ્હારે સાથ હોને વાલે વાકિએ કો ગૌસે આ'ઝમ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم કી દુઆ કી બ-ર-કત સે બેદારી સે ખ્વાબ મેં મુન્તાકિલ કર દિયા.” યુનાન્યે વોહ બારગાહે ગૌસિચ્ચત મઆબ મેં હાઝિર હુવા. ગૌસે આ'ઝમ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ને દેખતે હી ફરમાયા : “वाकेई मैं ने तुम्हारे लिये 17 मर्तबा दुआ मांगी थी.” (تَهَجُّةُ الْاَسْرَارِ ص ١٤) અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કી ઉન પર રહમત હો ઓર ઉન કે સદકે હમારી બે હિસાબ મગ્ફિરત હો.

गरज आका से कइं अर्र के तेरी है पनाह

बन्दा मजबूर है पातिर पे है कब्जा तेरा

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

અઝાબે કબ્ર સે રિહાઈ

એક ગમગીન નૌ જવાન ને આ કર બારગાહે ગૌસિચ્ચત મેં ફરિયાદ કી : હુઝૂર ! મેં ને અપને વાલિદે મહૂમ કો રાત ખ્વાબ મેં દેખા, વોહ કહ રહે થે : “बेटा ! मैं अजाबे कब्र में मुप्तला हूं, तू सच्यिदुना शैख अब्दुल कादिर जलानी قُدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي कી બારગાહ મેં હાઝિર હો

करमाने मुस्तक! عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज्जे पर ओक बार दुइटे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रकमते बेजता है. (५)

कर मेरे लिये हुआ की दर-ज्वास्त कर.” येह सुन कर सरकारे बगदाद हुजुरे गौसे आ'उम رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ عَلَيْهِ ने ईस्तिफ़सार इरमाया : क्या तुम्हारे अब्बाजान मेरे मद्रसे से कत्मी गुजरे हैं? उस ने अर्ज की : जो हां. बस आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى पामोश हो गये. वोह नौ जवान यला गया. दूसरे रोज़ पुश पुश हाजिरे बिदमत हुवा और कलने लगा : या मुर्शिद ! आज रात वालिदे मईम सज्ज हुल्ला (या'नी सज्ज लिबास) जैबे तन किये ज्वाब में तशरीफ़ लाये, वोह बेहद पुश थे, कल रहे थे : “बेटा ! सय्यिदुना शैफ़ अब्दुल कादिर जलानी كَاتِبُ سَيِّدَةِ الرَّبَّانِيَّاتِ की ब-र-कत से मुज्जे से अजाब दूर कर दिया गया है और येह सज्ज हुल्ला भी मिला है. मेरे प्यारे बेटे ! तू ईन की बिदमत में रहा कर.” येह सुन कर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इरमाया : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुज्जे से वा'दा इरमाया है के जो मुसल्मान तेरे मद्रसे से गुजरेगा उस के अजाब में तफ़्हीफ़ (या'नी कमी) की जायेगी.

(تَهَجُّةُ الاسرار ص ११६)

नज़्म में, गोर में, मीज़ां पे सरे पुल पे कहीं

न छुटे हाथ से दामाने मुअल्ला तेरा

(हदाईके बज्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**मुर्दे की थीफो पुकार**

ओक मर्तबा बारगाहे गौसिय्यत मआब में हाजिर हो कर लोगो ने अर्ज की : आलीजह ! “बाबुल अज्ज” के कब्रिस्तान में ओक कब्र से मुर्दे के थीफने की आवाजें आ रही हैं. हुजुर ! कुछ करम इरमा दीजिये के बेयारे का अजाब दूर हो जाये. आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने ईशाद इरमाया : क्या उस ने मुज्जे से बिर्कमे बिलाइत पलना है? लोगो ने अर्ज की : हमें मा'लूम नहीं. इरमाया : क्या कत्मी वोह मेरी मजलिस में हाजिर हुवा? लोगो ने ला ईल्मी का ईजहार किया. इरमाया : क्या उस ने कत्मी मेरा

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुबुदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طرائق)

पाना पाया? लोगों ने फिर ला ष्मी का ष्जहार किया. आप ﷺ ने पूछा : क्या उस ने कभी मेरे पीछे नमाज अदा की? लोगों ने बोली जवाब दिया. आप ﷺ ने जरा सा सरे अकदस लुकाया तो आप ﷺ पर जलाल व वकार के आसार जाहिर हुअे. कुछ देर के बाद इरमाया : मुझे अमी अमी फिरिशतों ने बताया : “उस ने आप की जियारत की है और उसे आप से अकीदत भी थी लिहाजा अल्लाह तबा-र-क व तआला ने उस पर रहुम किया.” اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उस की कअ से आवाजें आनी अन्द हो गईं.

(بهجة الاسرار للشطنوفى ص 194)

बद सही, योर सही, मुजरिमो नाकारा सही

औ वोह केसा ही सही है तो करीमा तेरा

(हदाईके अशिश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

तालिबे गमे मदीना व

अकीअ व अगिरत व

बे हिसाब जन्तुल

फिरदौस में आका

का पडोस



18 रबीउन्नूर शरीफ 1427 सि.हि. 17-4-2006

येह रिसाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी गभी की तकरीबात, ष्जतिभाआत, आ'रास और जुलूसे मीवाह वगैरा में मक-त-अतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी इलों पर मुशतमिल पेम्ब्लेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाहकों को अ निय्यते सवाब तोहफे में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाईल रबने का मा'भूल बनाईये, अण्बार फरोशों या अय्यों के जरीअे अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज कम अक अदद सुन्नतों त्भरा रिसाला या म-दनी इलों का पेम्ब्लेट पछोंया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाईये और भूब सवाब कमाईये.